प्रकाशन : केविके/एन.एच.आर./2023/07

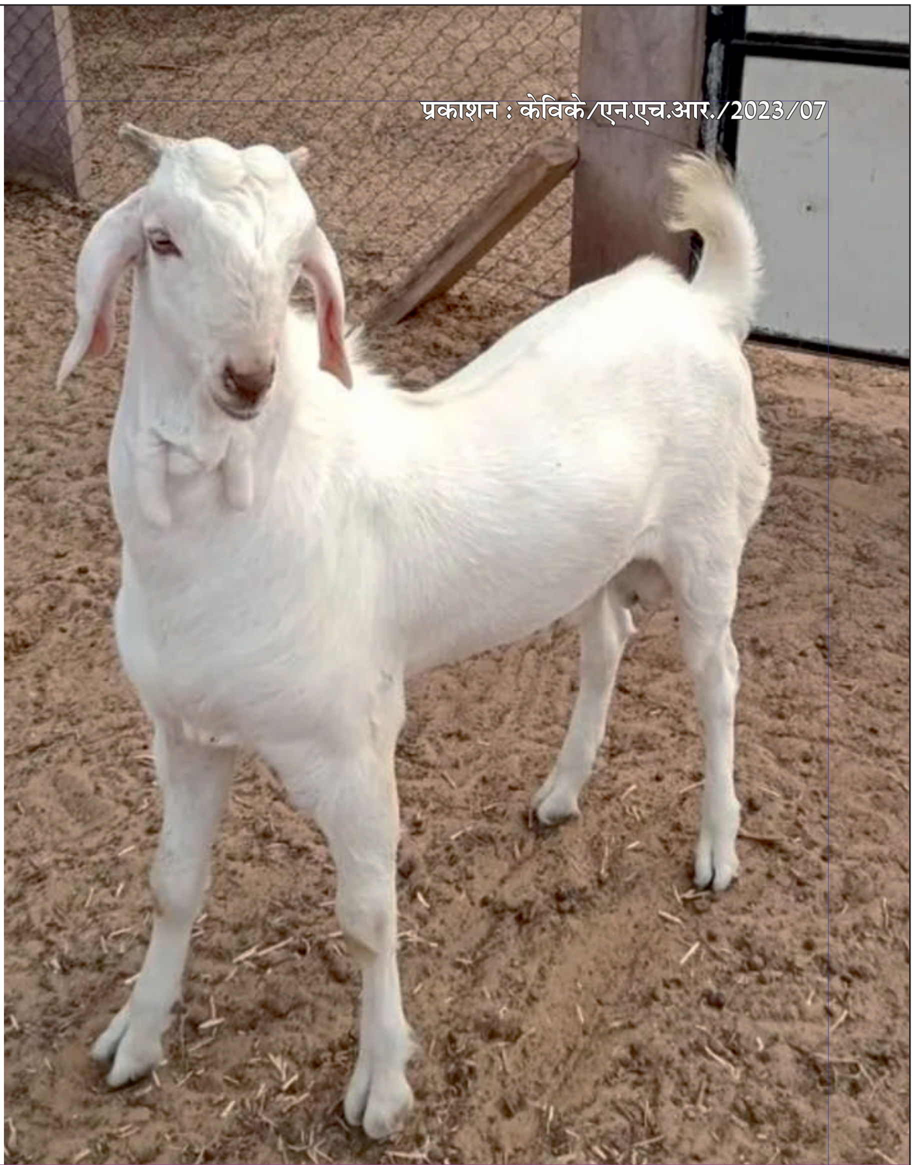

बकरी पालन

संकलन एवं आलेख

डॉ. विक्रमजीत सिंह
विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशु विज्ञान)

डॉ. सुरेश चंद कांटवा
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
निदेशक प्रसार शिक्षा

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर

प्रसार शिक्षा निदेशालय

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

भाकृअनुप
ICAR

vuØef.kdk

क्रम सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	परिचय	02
2.	उन्नत व उपयुक्त नस्ल का चयन	03
3.	बकरियों की मुख्य नस्लें	05
4.	बकरियों में प्रजनन प्रबन्धन	09
5.	आवास प्रबन्धन	12
6.	आहार प्रबन्धन	12
7.	स्वास्थ्य प्रबन्धन	14
8.	बकरियों में प्रमुख रोग	15
8.	रख-रखाव व बिक्री	17
9.	बकरी पालन हेतु आय-व्यय का विश्लेषण	19

बकरी पालन

परिचय

किसान खेती के साथ पशुपालन और उसका उपयोग प्राचीन काल से ही करते आ रहे है । पशुओं की उपयोगिता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि, कृषि से जुड़े कई प्रमुख कार्यों में इनका इस्तेमाल किया जाता रहा है । इनके गोबर से बनी जैविक खाद, कृषि उपज को बढ़ावा देती है। इन पशुओं का प्रमुख स्रोत दूध और मांस तो है ही इसके साथ यह किसानों के लिए आय का प्रमुख साधन भी है। ऐसे में मौजूदा वक्त में कुछ किसान कृषि में ज्यादा लाभ न मिल पाने के वजह से पशुपालन की ओर अपना झुकाव दिखा रहे है, अगर आप भी पशुपालन करने के बारे में सोच रहें हैं, तो बकरी पालन की शुरुआत कर सकते हैं। बकरी पालन में सबसे बड़ा फायदा यह है की इसके लिए बाजार स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब की गाय के नाम से मशहूर बकरी हमेशा से ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है। बकरी छोटा जानवर होने के कारण इसके रख–रखाव में लागत भी कम आती है। सूखा पड़ने के दौरान भी इसके खाने का इंतजाम सरलता से हो सकता है। इसकी देखभाल का कार्य भी महिलाएं एवं बच्चे आसानी से कर सकते हैं और साथ ही जरुरत पड़ने पर इसे आसानी से बेचकर अपनी जरूरत भी पूरी की जा सकती है। बकरी पालन कृषि प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। घरेलू बकरी व्यापक रूप से एक छोटी जुगाली करने वाली प्रजाति है। यह मुख्य रूप से छोटे व भूमिहीन किसानों द्वारा उत्पादन की विस्तृत, अर्द्ध गहन, गहन प्रणालियों के अंतर्गत रखी जा सकती है। बहुत कम आदानों के साथ कोई भी व्यक्ति बकरी पालन से आजीविका के लिए पर्याप्त लाभ कमा सकता है। बकरी पालन प्रायः सभी जलवायु में कम लागत, साधारण आवास, सामान्य रख–रखाव तथा पालन–पोषण के साथ संभव है। इसके उत्पाद की बिक्री हेतु बाजार सर्वत्र उपलब्ध है। इन्हीं कारणों से पशुधन में बकरी का एक विशेष स्थान है। उपरोक्त गुणों के आधार पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी बकरी को 'गरीब की गाय' कहा करते थे। आज के परिवेश में भी यह कथन महत्वपूर्ण है। आज जब एक ओर पशुओं के चारे–दाने एवं दवाई महँगी होने से पशुपालन आर्थिक दृष्टि से कम लाभकारी हो रहा है वहीं बकरी पालन कम लागत एवं सामान्य देख–रेख में गरीब किसानों एवं खेतिहर मजदूरों के जीविकोपार्जन का एक साधन बन रहा है। इतना ही नहीं इससे होने वाली आय समाज के आर्थिक रूप से सम्पन्न लोगों को भी अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। बकरी पालन स्वरोजगार का एक प्रबल साधन बन रहा है। बकरी पालन व्यवसाय सबसे प्राचीनतम व्यवसायों में से एक है। इसमें थोड़ी सी पूंजी लगाकर व्यवसाय किया जा सकता है। तथा अधिक आय प्राप्त की जा सकती है। बकरी पालन करने के लिए पशुपालक को अलग से किसी आश्रय स्थल की आश्यकता नहीं पड़ती। उन्हें वो अपने घर पर ही आसानी से रख सकते हैं। बड़े पैमाने पर यदि बकरी पालन का कार्य किया जाएं, तब उसके लिए अलग से बाड़ा बनाने की जरुरत पड़ती है। राजस्थान में ज्यादातर लोग खेती किसानी के साथ बकरी पालन का कार्य करते हैं। ऐसी स्थिति में ये बकरियां खेतों और जंगलों में घूम फिर कर अपना भोजन आसानी से प्राप्त कर लेती है, अतः इनके लिए अलग से दाना–भूसा आदि की व्यवस्था बहुत कम मात्रा में करनी पड़ती है। देशी बकरियों के अलावा उन्नत नस्लों की बकरी पालन करने के लिए दाना, भूसा और चारा आदि की समुचित व्यवस्था करनी पड़ती है । लेकिन वह भी सस्ते में हो जाता है । दो से पांच बकरी तक एक परिवार बिना किसी अतिरिक्त व्यवस्था के आसानी से पाल सकता है। बकरियों के रहने के लिए साफ–सुथरी एवं सूखी जगह की जरुरी होती है। इसे लाभप्रद व्यवसाय बनाने के लिए जलवायु के अनुरूप अच्छी नस्लें विकसित की गई हैं। इस व्यवसाय को सुचारू रूप से करने के लिए निम्न बातों को ध्यान रखना अनिवार्य है:

बकरी पालन

- उन्नत व उपयुत नस्ल का चयन
- बकरी की मुख्य नस्लें
- प्रजनन प्रबन्धन
- आवास प्रबन्धन
- आहार प्रबन्धन
- स्वास्थ्य प्रबन्धन
- रख रखाव व बिक्री

उन्नत व उपयुक्त नस्ल का चयन–

भारत में लगभग 37 मुख्य बकरियों की नस्लें पाई जाती है। इन बकरियों की नस्लों को उत्पादन के आधार पर तीन भागों में बाँटा गया है।

दुधारू नस्लें– इसमें जमुनापारी, सूरती, जखराना, बरबरी और बीटल आदि नस्लें शामिल हैं।

माँस उत्पादक नस्लें– इनमें ब्लेक बंगाल, उस्मानाबादी, मारवाडी, मेहसाना, संगमनेरी, कच्छी तथा सिरोही नस्लें शामिल हैं।

ऊन उत्पादक नस्लें– इनमें कश्मीरी, चाँगथाँगी, गद्दी, चेगू आदि है जिनसे पश्मीना की प्राप्ति होती है।

Registered Breeds of Goat in India

Assam Hill

Attapady

Barbari

Gohilwadi

Beetal

Berari

Bhakarwali

Jakhrana

Bidri

Black Bengal

Changathangi

Jamunapuri

Chegu

Gaddi

Ganjam

Kahmi

Kanni Adu

Kodi Adu

Konkan Kanyal

Kutchi

Malabari

Marwari

Mehsana

Nandidurga

Osmanabadi

Pantja

Rohilkhandi

Salem Black

Sangamneri

Sirohi

Sumi-Ne

Surti

Teressa

Zalawadi

बकरियों की मुख्य नस्लें

सोजत

यह बड़े आकार की, दोहरे उद्देश्य वाली बकरी है, जो राजस्थान के पाली, जोधपुर, नागौर और जैसलमेर जिलों में पाई जाती है। इन जानवरों के कोट का रंग, सिर, गर्दन, कान और पैरों पर भूरे धब्बों के साथ सफेद होता है। अधिकांश मादाओं में वाटल मौजूद होते हैं जबकि नर में पूरी तरह से अनुपस्थित होते हैं। सींग घुमावदार और नीचे की ओर उन्मुख होते हैं, मादाओं में मुड़े हुए होते हैं जबकि नर पूरी तरह से पोले होते हैं। औसत वयस्क वजन बकरों का लगभग 60.0 किलोग्राम और बकरियों का 53.0 किलोग्राम होता है। औसत दैनिक दुग्ध उत्पादन, दुग्धकाल में दुग्ध उत्पादन और दुग्धकाल की लंबाई क्रमशः 1060–1212.59 ग्राम, 266.64$\pm$0.63 किग्रा और 232.92$\pm$1.17 दिन है।

करौली

करौली बकरियां मध्यम से बड़े आकार और दोहरे उद्देश्य वाली नस्ल की होती हैं, जो राजस्थान के सवाई माधोपुर, कोटा, बूंदी और बारां जिलों में पाई जाती हैं। कोट का रंग पैटर्न चेहरे, कान, पेट, पैर और पिन हड्डियों के पास भूरे रंग की पट्टियों के साथ काला है। करौली बकरियों के कान लंबे, लटकते हुए, मुड़े हुए, और कानों के किनारों पर भूरी रेखाएं होती हैं। जानवरों की नाक रोमन होती है। सींग मध्यम आकार के कॉर्क स्क्रू आकार के होते हैं जो ऊपर की ओर नुकीले होते हैं जो करौली बकरी की सबसे विशिष्ट विशेषता है। औसत वजन वयस्क बकरों का लगभग 52.0 किलोग्राम और बकरियों का 45.0 किलोग्राम है। औसत दैनिक दूध की उपज, दुग्धकाल में दूध की उपज और दुग्धकाल की लंबाई क्रमशः 1530.4319.61 ग्राम, 270.042.24 किलोग्राम और 251. 70$\pm$6.53 दिन है।

गुजरी

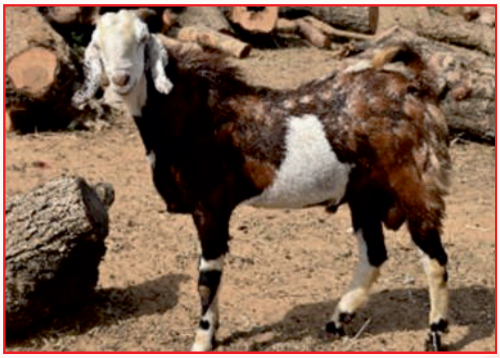

गुजरी बकरी बड़े आकार की दोहरे उद्देश्य वाली नस्ल है, जो मुख्य रूप से राजस्थान के जयपुर और सीकर जिलों में पाई जाती है। जानवर भूरे और सफेद मिश्रित कोट रंग के होते हैं, जबकि सफेद रंग का चेहरा, पैर और पेट नस्ल की विशिष्ट विशेषताएँ हैं। कान लंबे, लटकते हुए और मुड़े हुए होते हैं, और सींग छोटे, पीछे की ओर मुड़े हुए होते हैं। बकरों के दाढ़ी होती है, जबकि वयस्क बकरियों में यह पूरी

तरह से अनुपस्थित होती है। औसत वयस्क वजन बकरों का लगभग 69.0 किलोग्राम और बकरियों का 58.0 किलोग्राम है। औसत दैनिक दुग्ध उत्पादन, दुग्धकाल में दुग्ध उत्पादन और दुग्धकाल की अवधि क्रमशः 1616.47$\pm$11.45 ग्राम, 347.54$\pm$2.24 किग्रा और 250.46$\pm$0.95 दिन है।

सिरोही

इस नस्ल की बकरियां राजस्थान के सिरोही जिले में पाई जाती है। समीपवर्ती जिले अजमेर, उदयपुर, राजसमंद, में भी यह नस्ल प्रमुख रूप से पाई जाती है। कॉम्पैक्ट मध्यम आकार के जानवर। कोट का रंग मुख्य रूप से हल्के या गहरे भूरे रंग के धब्बों के साथ भूरा होता है। बालियाँ चपटी और पत्ती जैसी, मध्यम आकार की और लटकी हुई होती हैं। यह नस्ल स्टाल फीडिंग के लिए उपयुक्त है। नस्ल का उपयोग मुख्य रूप से मांस के लिए किया जाता है। दूध की उपज अपेक्षाकृत कम है, प्रति दिन लगभग 0.5 किलोग्राम, 120 दिनों की दुग्धकाल अवधि में औसत दूध की उपज 65 किलोग्राम है। आमतौर पर साल में दो बार बच्चे होते हैं, 40 प्रतिशत मामलों में सिंगल को जन्म देते हैं जबकि 60 प्रतिशत मामलों में जुड़वाँ, वे साल में दो बार बच्चे पैदा करते हैं।

जमुनापारी

इसका घर यूपी की जमुना, गंगा और चंबल नदियों के बीच भरतपुर (खुबेर) है। कोट के रंग में बहुत भिन्नता होती है, लेकिन वे आम तौर पर सफेद या हल्के पीले रंग के होते हैं, गर्दन और चेहरे पर हल्के भूरे रंग के धब्बे होते हैं, और कभी–कभी शरीर पर टेन या काले रंग के धब्बे पाए जाते हैं। नस्ल का विशिष्ट चरित्र बालों के गुच्छे के साथ एक अत्यधिक उत्तल नाक रेखा है जिसे 'रोमन नाक' या तोते के

मुंह की उपस्थिति के रूप में जाना जाता है। कान बहुत लंबे, चपटे और लटके हुए होते हैं। इस नस्ल के बड़े शंक्वाकार थनों के साथ अच्छी तरह से विकसित थन गोल आकार के होते हैं। दूध प्रतिशत औसत दैनिक उपज 1.5 से 2.0 किग्रा प्रति दिन होती है, जिसमें कुल दुग्ध उत्पादन लगभग 200 किग्रा होता है। आम तौर पर साल में एक बार बच्चे पैदा करते हैं, 57 प्रतिशत में सिंगल को जन्म देते हैं जबकि 43 प्रतिशत मामलों में जुड़वा बच्चे साल में एक बार बच्चे को जन्म देते हैं।

बरबरी

यह नस्ल एक उत्तम डेयरी प्रकार की बकरी है। भारत में नस्ल यूपी के इटावा, आगरा, मथुरा और अलीगढ़ जिलों में पाई जाती है। राजस्थान के भरतपुर जिले में भी पाई जाती है। कॉम्पैक्ट बॉडी वाले छोटे पशु है। जहां कोट के रंग में व्यापक भिन्नता है, लेकिन छोटे हल्के भूरे रंग के पैच के साथ सफेद सबसे आम है। कान छोटे, ट्यूबुलर और खड़े होते हैं। बकरों की बड़ी घनी दाढ़ी होती है। दूध प्रतिशत दैनिक दूध की उपज औसतन लगभग 750 मिली से 1000 मिली। लगभग 5 की वसा प्रतिशत के साथ 150 दिनों की दुग्धकाल अवधि में औसत स्तनपान 130–200 किलोग्राम दूध हो सकता है। यह 12–15 महीनों की अवधि में दो बार बच्चे पैदा कर सकते है। बच्चों की संख्या 'एकल 25%, जुड़वाँ 65% और ट्रिपल 10%। एक अच्छा दूध देने वाला नस्ल होने के अलावा यह अत्यधिक बच्चे जनने वाली होती है और आम तौर पर जुड़वाँ और तीन बच्चों को जन्म देती है। यह बौनी नस्ल है जो स्टाल–फीडिंग स्थितियों के लिए अत्यधिक अनुकूल है और इसलिए आमतौर पर शहरों में पाई जाती है।

जखराना

यह नस्ल राजस्थान के अलवर जिले के झकराना और बहरोड़ के आसपास के कुछ गांवों में पाई जाती है। नस्ल बड़ी है और एक अच्छी डेयरी प्रकार भी है। जानवर बड़े और मुख्य रूप से कान और थूथन पर सफेद धब्बे के साथ काले होते हैं। माथा थोड़ा उभरा हुआ है। इन बकरियों का उपयोग मुख्य रूप से दूध उत्पादन के लिए किया जाता है।

लगभग 180—200 दिनों की दुग्धकाल अवधि के लिए औसत दैनिक दुग्ध उत्पादन 2.0—3.0 किग्रा होता है। किडिंग ज्यादातर सिंगल होती है लेकिन 40 प्रतिशत मामलों में जुड़वां बच्चों को जन्म दिया जाता है। ट्रिपल असामान्य नहीं हैं। बकरियां उपयोगी मांस उत्पादक भी हैं, और उनकी खाल टैनिंग उद्योग में लोकप्रिय है।

मारवाड़ी

इस नस्ल की बकरियां राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र, जोधपुर, जैसलमेर, जिलों में पाई जाती है। यह काले रंग की मध्यम आकार, काले बालों से ढका हुआ शरीर व छोटे थन होते है। यह नस्ल माँस उत्पादन के लिए पाली जाती है। दूध उत्पादन 0.5 से 1.0 किलोग्राम प्रतिदिन होता है।

ब्लैक बंगाल

यह नस्ल मुख्य रूप से वेस्ट बंगाल, असम और ओडिशा में पाई जाती है। कोट का रंग मुख्य रूप से काला, भूरा और सफेद होता है जिसमें मुलायम, चमकदार और छोटे बाल होते हैं। शरीर आकार में बौना, पैर छोटे, सीधी पीठ व दोनों लिंग दाढ़ी वाले हैं। बकरों का औसत जीवित वजन 15 किलो और बकरी का 12 किलो होता है। भारतीय नस्लों में सबसे अधिक बच्चे पैदा करने वाली नस्ल है। एकाधिक जन्म सामान्य हैं — एक समय में दो, तीन या चार बच्चे पैदा होते हैं। प्रसव साल में दो बार होता है। पहली बार प्रसव करने की औसत उम्र 9—10 महीने होती है। औसत दुग्ध उत्पादन 53 किग्रा है। स्तनपान की अवधि 90 से 120 दिन है। उच्चगुणवत्ता वाले जूते बनाने के लिए इसकी त्वचा की काफी मांग है।

चेंगू

चेंगू बकरी की नस्ल भारत में उत्तर प्रदेश के उत्तरी भाग और हिमाचल प्रदेश के उत्तर—पूर्व में पाई जाती है। कोट का रंग मुख्य रूप से सफेद होता है लेकिन भूरे लाल और मिश्रित रंग भी देखे जाते हैं। बकरे का औसत जीवित वजन 39 किग्रा और बकरी का 26 किग्रा होता है। औसत जन्म वजन 2.0 किग्रा है। किडींग साल में एक बार होती है और ज्यादातर एकल होती है। औसत दुग्ध उत्पादन 69 किग्रा और दुग्धकाल की अवधि 187 दिन है। नमक और छोटे भार ढोने के लिए ड्राफ्ट (पैक) के लिए उपयोग किया जाता है। नीचे नाजुक रेशों (कश्मीरी या पश्मीना) के कोट के साथ लंबे बाल होते हैं। पैर मध्यम आकार के होते हैं। चेहरा और थूथन पतला होता है। कान छोटे होते हैं। सींग ऊपर, पीछे और बाहर की ओर एक या एक से अधिक घुमावों के साथ मुड़े हुए होते हैं।

बकरियों में प्रजनन प्रबन्धन

प्रजनन की क्रिया लैंगिक परिपक्वता के उपरांत ही आरम्भ होती है। सही समय पर प्रजनन न होने से उत्पादन क्षमता में कमी आती है, साथ ही बकरी पालक को आर्थिक हानि भी होती है, अतः बकरी पालक को प्रजनन व्यवहार के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी रखना अति आवश्यक है।

परिपक्व होने की आयु

पालन पोषण की उचित दशा में बकरियां लगभग 8–10 माह में प्रौढ़ हो जाती है। बकरियों को 15–18 माह (शरीर का भार 22–25 किलोग्राम होना चाहिए) की आयु में गर्भित करना ठीक रहता है । दूसरी पशु प्रजातियों की तरह ही बकरियों की प्रजनन क्षमता, आयु बढ़ने के साथ बढ़ती है। यह 4 से 6 वर्ष की आयु तक अधिकतम होती है । बकरियों में प्रजनन क्षमता सात वर्ष की आयु तक बनी रहती है। इसके बाद धीरे–धीरे घटने लगती है। लगभग 10 वर्ष की आयु तक बच्चे पैदा करने में बकरियां सक्षम होती हैं, किन्तु अधिकांश बकरीपालक इन्हें 7 से 8 वर्ष की आयु के बाद अपने रेवड़ से हटा देते हैं। नर बकरे 2 से 6 वर्ष की अवस्था तक प्रजनन योग्य बने रहते हैं। बकरी का जीवन काल 10–12 वर्ष का होता है । दूध देने वाली बकरी की प्रजातियों में प्रति ब्यांत बच्चे देने की दर मांस के लिए पाली जाने वाली बकरियों की अपेक्षा कम होती है।

मदकाल

बकरियों का गर्मी में आने के समय को मदकाल कहते है। भारतीय प्रजाति की बकरियां लगभग पूरे साल ही मद (गर्मी) में आती रहती हैं। यद्यपि इसकी आवृत्ति घटती–बढ़ती रहती है, तथापि रेवड़ की स्वस्थ बकरियां गर्भ न ठहरने पर 17 से 21 दिनों के अंतराल पर नियमित ऋतुचक्र (मदचक्र) में आती रहती हैं। इसके कारण प्रजनन प्रक्रिया साल भर चलती रहती है। यह प्रभावी पशु प्रबंध एवं आर्थिक दृष्टि से व्यावहारिक नहीं है। बकरी पालन में प्रजनन को इस प्रकार समायोजित करना चाहिए कि नवजात बच्चों के स्वास्थ्य के लिए मौसम अनुकूल बना रहे। इसके साथ ही चारा संसाधनों की प्रचुर उपलब्धता बनी रहे, ताकि आगे चलकर विक्रय के लिए बाजार मांग की पूर्ति होती रहे। बकरियों में मदकाल की अवधि लगभग 30 घंटे (12–48घंटे) तक होती है। इसी सीमित अवधि में बकरे को समागम का अवसर देती हैं। इस दौरान नैसर्गिक या कृत्रिम गर्भाधान कराने पर वे गर्भित हो जाती हैं। मदकाल में आई बकरियों का पता करने के लिए बकरीपालक 50 से 60 बकरियों के समूह में एक टीजर बकरा सुबह और शाम आधा–आधा घंटा उनके आसपास घुमाते हैं। बकरी के मदकाल या गर्मी में आने के लक्षण इस प्रकार है जैसे बकरी का बार बार पूंछ हिलाना, बकरे के आस पास चक्कर लगाना, बकरी का बार बार बोलना, दूध उत्पादन कम होना, योनि में सूजन और योनि मार्ग से थोड़ी मात्रा में पारदर्शी द्रव का गिरना आदि है। रेवड़ में 20–25 बकरियों पर एक बकरा काफी होता है । नवंबर और दिसंबर का मौसम प्रजनन के लिए अनुकूल है। इस मौसम में गर्भधारण करने वाली बकरियां मार्च–अप्रैल तक बच्चे देती हैं। बकरियों में गर्भ काल का औसतन समय 150 (145–155) दिन का होता है । प्रायः एक बकरी एक बार में 1 से 2 बच्चों को जन्म देती है और लगातार दो साल में तीन बार बच्चे देती है। बच्चे को 6–8 माह तक पालने के बाद ही बेचना चाहिए।

गर्भकाल से प्रसव

गर्भावस्था और उसके बाद प्रसव जनन का तीसरा चरण है। गर्भावस्था में की गई देखभाल और पोषण आगे आने वाली सन्तति के भविष्य का निर्धारण करते हैं। गर्भकाल का समय ऐसा होता है जब बकरी को अपने शरीर के साथ–साथ गर्भ में पल रहे बच्चों का भी पोषण करना पड़ता है। ग्याभिन बकरी को गर्भावस्था के अंतिम 45 दिनों में उचित आहार देना अत्यंत आवश्यक है। इस अवधि में बकरी का दूध नहीं दूहना चाहिए, जिससे गर्भ में पल रहे बच्चे को उचित पोषण मिलता रहे। प्रत्येक ग्याभिन बकरी को प्रतिदिन 150–250 ग्राम दाना मिश्रण और पर्याप्त हरा चारा आवश्यक है। पर्याप्त हरा चारा न मिलने पर विटामिन 'ए' भी देना चाहिए, क्योंकि ऊर्जा और विटामिन 'ए' की कमी से गर्भपात की आशंका बढ़ जाती है। इनमें प्रसव का समय अन्य पशु प्रजातियों के समान महत्वपूर्ण है। रेवड़ में बकरियों में नैसर्गिक विधि से गर्भाधान करवाया जाता है। ऐसे में प्रसव क्रिया का ज्ञान और भी आवश्यक हो जाता है। इससे प्रसव की तिथि की निश्चित गणना सम्भव नहीं है। बकरियों में सन्निकट प्रसव के लक्षण स्पष्ट न होने के कारण गर्भावस्था के अंतिम पखवाड़े में ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इस समय हल्का सुपाच्य दाना–चारा दिया जाए। उनके शरीर के पिछले भाग विशेषकर बाह्य जननांगों के आसपास के अनावश्यक बालों को काट देना चाहिए। ब्याने से एक सप्ताह पूर्व उन्हें ऊंचे–नीचे स्थानों पर न चराएं। ब्याने की सम्भावित तिथि से एक पखवाड़े पूर्व कुछ तैयारियां कर लेनी चाहिए। ब्याने वाली प्रत्येक बकरी को अलग बाड़े में रखें। इसमें सूखी घास या जूट के बोरे का बिछौना बिछा दें । बकरीपालकों को चाहिए कि वे ब्याने वाली बकरियों का सुबह–शाम अवश्य देखें, ताकि ब्याने के समय का आसानी से पूर्वानुमान हो सके। बकरी के जैसे–जैसे ब्याने का समय निकट आता जाताहै, उनमें अनेक परिवर्तन दिखायी देने लगते हैं। इनकी बेचैनी बढ़ जाती है। बकरी के अयन के आकार में एकाएक बढ़ोतरी हो जाती है। थनों में चमक तथा फूलापन दृष्टिगोचर होने लगता है। पहली बार ब्याने वाली अधिकांश बकरियों के थनों में दूध आता है। बकरी के योनि मार्ग से पीले रंग का लसलसा और गाढ़ा स्राव निकलना आरंभ हो जाता है। बकरी रेवड़ में एकान्त स्थान पर उठती–बैठती है। ऐसी बकरी ब्याने के कुछ घंटे पूर्व बार–बार उठती–बैठती तथा अनमनी हो जाती है। प्रसव पीड़ा शुरू में हल्की और बाद में तीव्र होने लगती है। यह लक्षण इस बात का संकेत हैं कि बकरी शीघ्र ब्याने वाली है।

सामान्यतः प्रसव वेदना प्रारंभ होने के 3 से 4 घंटे में बकरी बच्चे को जन्म दे देती है। पहली बार ब्याने पर कुछ अधिक समय लेती है। बच्चा बाहर आने से पहले एक झिल्लीनुमा चमकीला गुब्बारा निकलता है। बकरी को स्वाभाविक रूप से जनने देना चाहिए। सामान्य प्रसव में बच्चे के दोनों पैर और सिर योनि मार्ग से बाहर आते हैं। इसके बाद शरीर का शेष भाग बाहर आ जाता है। अन्य बच्चे भी इसी क्रम में बच्चेदानी से बाहर आते हैं। सामान्यतः बकरी का जेर ब्याने के 3 से 6 घंटे के अंदर निकल आता है। प्रसव क्रिया अगर यदि सामान्य न हो तो पशु चिकित्सक की सहायता लें।

प्रसवोपरान्त प्रजनन

एक जननचक्र सफल प्रजनन से प्रारंभ होकर सामान्य प्रसव के साथ पूर्ण हो जाता है। बकरियों की उत्पादन क्षमता बनाए रखने के लिए जननचक्र में निरंतरता आवश्यक है। इससे प्रसव पश्चात बकरियों को जल्दी मद में आने से उन्हें पुनः प्रजनित किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को अपनाने से दो ब्यांतों के बीच अंतराल में कमी आती है तथा क्षमता में वृद्धि होती है। जननचक्र की पुनरावृत्ति के लिए बकरीपालक अपने रेवड़ में नस्ल के अनुसार पुनः गर्भाधान करवाकर बकरी की उत्पादन क्षमता का लाभ उठा सकते हैं।

प्रजनक बकरों का चयन

बकरे के जनक शुद्ध नस्ल के रहे हों तथा स्वयं भी शारीरिक रूप से स्वस्थ हों। बकरा किसी आनुवंशिक रोग से ग्रसित न हो एवं उसका वाहक भी न हो। जनक उच्च प्रजनन क्षमता वाले रहे हों। इनकी सन्तानों में मृत्युदर का स्तर कम रहा हो। जनक में दूध, मांस या रेशे की उत्पादक क्षमता उच्च स्तरीय रही हो। बकरे में पूर्ण रूप से विकसित जननांग हों एवं उसकी प्रजनन क्षमता भी उच्च स्तरीय हो। वह विभिन्न उम्र सोपानों (जन्म, तीन माह, छह माह, नौ माह और बारह माह) पर अधिक भारधारक रहा हो। बकरा देखने में आकर्षक एवं क्षमतावान होना चाहिए।

प्रजनक बकरियों का चयन

बकरी का चयन केवल एक विशेषता पर आधारित नहीं होना चाहिए। सीधे पैर के साथ और चौड़े/गहरे शरीर का चयन किया जाना चाहिए। स्वस्थ और स्मार्ट, सुगठित शरीर, चार पैरों पर समान रूप से खड़ा होना, बच्चों की अच्छी परवरिश। जुड़वां जन्म देने में सक्षम होने के लिए पर्याप्त आकार, दो वर्षों में लगभग 3 बार जन्म। शरीर का अच्छा और उपयुक्त विकास, चमकदार और आकर्षक शरीर, और प्रजनन अंगों का अच्छा विकास होता है।

अन्तः प्रजनन से बचाव

सम्बन्धियों के आपस में प्रजनन को अन्तः प्रजनन कहते है। रेवड़ में अन्तः प्रजनन को रोकना आवश्यक है क्योंकि इससे बकरियों के उत्पादन एवं अन्य गुणों में गिरावट आ जाती है। इससे रेवड़ में उत्पादन दोष पैदा हो जाता है जिससे लगभग सभी गुणों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः प्रजनन को कम करने के लिए रेवड़ में बीजू बकरा प्रयोग करते समय ध्यान देना चाहिए कि कहीं इसका प्रयोग इसके रक्त सम्बन्धियों के साथ तो नहीं किया जा रहा है। रेवड़ में बीजू बकरे के नजदीक के संबंधी उसकी माँ, बहिन, पूत्री व चचेरी बहिन आदि हो सकते है। रेवड़ में अन्तः प्रजनन की स्थिति आने पर बकरीपालक को चाहिए कि वह दूर के रेवड़ से बीजू बकरा खरीद या मांग कर अपने रेवड़ की मादाओं से प्रजनन करायें। ऐसा करने से रेवड़ में नर व मादा का खून बदल जायेगा और रेवड़ में उत्पादन स्तर सुधर जायेगा। रेवड़ में बीजू बकरे को लगातार 2–3 वर्ष से अधिक प्रयोग नही करना चाहिए। ऐसे सभी बकरे जो प्रजनन में प्रयोग

नही करते है उन्हें 3 महीने की आयु तक बधिया कर उचित शरीर भार प्राप्त होने पर बेच देना चाहिए। बधिया करने से उनमें बढ़वार अधिक होती है तथा उनसे प्राप्त मांस अच्छी गुणवत्ता का होता है।

आवास प्रबन्धन

बकरी पालन के लिए एक व्यवस्थित स्थान की आवश्यकता होती है । इस कार्य के लिए स्थान का चयन करते हुए निम्न बातों पर ध्यान दें ।

स्थान का चयन : सर्वप्रथम बकरी पालन के लिए ऐसे स्थान का चयन करें, जो शहर क्षेत्र से बाहर अर्थात किसी ग्रामीण इलाके में हो। ऐसे स्थानों पर बकरियां शहर के प्रदूषण तथा अनावश्यक शोर से सुरक्षित रहेंगी ।

शेड का निर्माण : आपको बकरी पालन के लिए चयनित स्थान पर शेड का निर्माण कराना होगा। शेड निर्माण करते समय इसकी ऊंचाई न्यूनतम 10 फीट की रखें। शेड का निर्माण इस तरह से कराएं कि हवा आसानी से आ जा सके। बकरियों की संख्या: बकरी पालन के लिए न्यूनतम एक यूनिट बकरियाँ होनी चाहिए ।ध्यान रहे कि पाली गयी सभी बकरियाँ एक ही नस्ल की हो ।

पेयजल : बकरियों को शीतल पेयजल मुहैया कराएं, इसकी सुविधा शेड के अन्दर स्थायी रूप से कराई जा सकती है ।

साफ सफाई : बकरियों के आस पास के स्थानों की साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें। इनके मल– मूत्र की साफ सफाई का ध्यान रखना आवश्यक है ।

बकरियों की संख्या का नियंत्रण : शेड में उतनी ही बकरियाँ पालें, जितनी आसानी से पाली जा सकती हैं। बकरियों के रहने के लिए साधारण, सूखे एवं स्वच्छ बाड़े होने चाहिए। बकरियों के आवास (बाड़े) मुख्तय तीन प्रकार के हो सकते हैं

1. पूर्ण खुला बाड़ा **2. अर्द्ध खुला बाड़ा** **3. पूर्ण ढका बाड़ा**

बकरियों के आवास में प्रति बकरी 10–12 वर्गफीट की जगह दें। बकरी के आवास की लंबाई वाली भुजा पूर्व–पश्चिम दिशा में होनी चाहिए। लंबाई वाली दीवार को एक से डेढ़ मीटर ऊंचा बनवाने के पश्चात दोनों तरफ जाली लगानी चाहिए। बाड़े का फर्श कच्चा तथा रेतीला होना चाहिए। उसमें समय–समय पर बिना बुझे चूने का छिड़काव करते रहना चाहिए। वर्ष में एक से दो बार बाड़े की मिट्टी बदल देनी चाहिए। 80 से 100 बकरियों के लिए बाड़ा 20 × 6 वर्ग मीटर ढका हुआ तथा 12 × 20 वर्ग मीटर खुला जालीदार क्षेत्र होना चाहिए। बकरा, बकरी तथा बच्चों को (ब्याने के एक सप्ताह बाद) अलग–अलग बाड़ों में रखना चाहिए। बच्चों को बकरी के पास दूध पिलाने के समय ही लाना चाहिए। अधिक सर्दी, गर्मी व बरसात में बकरियों के बचाव का व्यापक रूप से प्रबंध करना चाहिए।

आहार प्रबन्धन

बकरी एक जुगाली करने वाला पशु है लेकिन उनकी दूसरे पशुओं के मुकाबले खाने की आदत भिन्न होती है। बकरियां अपने हिलने डुलने वाले ऊपरी होठो तथा जिव्हा की सहायता से वे बहुत छोटी घास एवं पेड़

तथा झाड़ियों की पत्तियों को आसानी से खा जाती है। बकरी अपने शरीर के वजन का 3–5 प्रतिशत तक सूखा पदार्थ आराम से ग्रहण कर सकती है। बकरी के आहार को मुख्य तोर पर दो भागों में बाँटा जा सकता है–

चारा : चारे के रूप में किसान बकरियों को अनाज/दाल वाली फसलों से प्राप्त चारा, फलीदार हरा चारा, पेड़–पौधों की पत्तियों का चारा, विभिन्न प्रकार की घास आदि को काम में लिया जा सकता है।

दाना : दाना वह पदार्थ है जिसमें नमी व् क्रूड फाइबर की मात्रा अपेक्षाकृत कम, परन्तु प्रोटीन की मात्रा प्रचुर होती है। दाने अधिक पाचनशील भी होते है। दूध देने वाली बकरियों को जीवन निर्वाह के लिए 150 ग्राम के अतिरिक्त 300–400 ग्राम दाना प्रति किलोग्राम दूध के हिसाब से प्रति बकरी देना आवश्यक है। ग्याभिन बकरियों को गर्भावस्था के अन्तिम डेढ़ महीने में चराने के अतिरिक्त कम से कम 200–250 ग्राम दाने का मिश्रण अवश्य दें।

एक वयस्क बकरी को 1–3 कि.ग्रा. हरा चारा, 500 ग्राम से 1 कि.ग्रा. भूसा (यदि दलहनी हो तो और अच्छा है) तथा 150 ग्राम से 400 ग्राम तक दाना प्रतिदिन खिलाना चाहिए। दाना हमेशा दला हुआ व सूखा ही दिया जाना चाहिए और

उसमें पानी नहीं मिलाना चाहिए। साबुत अनाज नहीं खिलाना चाहिए। दाने में 60–65 प्रतिशत अनाज (दला हुआ) 10–15 प्रतिशत चोकर, 15–20 प्रतिशत खली (सरसों की खली छोड़कर), 2 प्रतिशत मिनरल मिक्स्चर तथा एक प्रतिशत नमक का मिश्रण होना चाहिए। बकरियों को प्रजनन काल के एक माह पूर्व से ही पचास से सौ ग्राम तक दाना अवश्य देना चाहिए, जिससे स्वस्थ बकरी से अधिक बच्चे पैदा हो सकें। इसी प्रकार बकरों को भी प्रजनन काल के दौरान प्रतिदिन सौ ग्राम दाना अतिरिक्त मात्रा में देना चाहिए । बकरियों को साफ पानी पिलाना चाहिए । नदी, तालाब व गड्ढे में जमा हुए गन्दे पानी को पीने से बकरियों को बचाना चाहिए।

बकरीपालक के लिए बकरियों की विभिन्न शारीरिक अवस्थाओं में उनकी पोषण आवश्यकतायें अलग–अलग होती है। बकरी चरने वाला पशु है। स्थानीय रूप से विकसित चारागाह/पेड–पौधा/कृषि फसलों की उपलब्धता, अच्छे हरे चारे के रूप में आवश्यक हैं। बकरी को यदि 8 घण्टे चराने पर पाला जाता है तो उसके शारीरिक भार का 1 प्रतिशत पौष्टिक आहार के रूप में खाने हेतु दिया जाये। उदाहरणार्थ 25 किग्रा. शारीरिक भार पर 250 ग्राम पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है।

स्वास्थ्य प्रबंधन

बकरी के स्वास्थ्य की देख रेख इनके प्रबंधन का एक प्रमुख स्तम्भ है। लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियों में किसी बीमारी से ग्रसित हो जाने पर इसका सीधा प्रभाव पशुपालक की आर्थिक स्थिति पर पड़ता है । बकरी पालन की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि बकरियां स्वस्थ तथा निरोगी रहें। यदि वे अस्वस्थ या बीमार हो जाएं, तो उनके रोग को पहचान कर तत्काल उपचार करें। इससे बकरियों को मृत्यु से बचाकर आर्थिक हानि से बचा जा सकता है। बकरियों में पी.पी.आर., ई.टी., खुरपका, मुंहपका तथा गलघोंटू रोगों के टीके अवश्य लगवाने चाहिए। कोई भी टीका 3–4 माह की आयु के उपरांत ही लगाया जाता है। इसलिए बरसात आते ही इन्हें रोगों से बचाने के लिए यथासंभव प्रयास करना चाहिए। ये सभी रोग बहुत तेजी से फैलते हैं। इन रोगों के लक्षण देखते ही यथाशीघ्र उपचार के उपाय करने चाहिए। इन रोगों का देसी इलाज भी प्रभावी होता है। पशु चिकित्सक को दिखाकर उपचार कराया जा सकता है। बीमार बकरी को तुरंत बाड़े से अलग करके चिकित्सा करानी

बीमारी का नाम	टीके का नाम	खुराक दर	पुनरावृति
फडकिया(ई.टी.)	मल्टी- कम्पोनेन्ट/ टाईप-डी	2 मि. ली., त्वचा के नीचे	प्रत्येक 6 महीने बाद
पी. पी. आर. (प्लेग)	टिशु कल्चर	1 मि. ली., त्वचा के नीचे	प्रत्येक 3 वर्ष बाद
खुरपका - मुहपका	पॉली वेलेन्ट	2-3 मि. ली., त्वचा के नीचे या मांस में	प्रत्येक 6 महीने बाद
गलघोटू (एच. एस.)	ऑयल-एडजूवेंट	2 मि. ली., मांस में	वर्ष में एकबार

चाहिए। ठीक होने पर बाड़े में पुनः लाना चाहिए। अंतःपरजीवी नाशक दवा वर्ष में दो बार पिलानी चाहिए (एक वर्षा से पूर्व, दोबारा वर्षा के उपरांत)। बाह्य परजीवीनाशक दवा के पानी से सावधानीपूर्वक बकरियों को स्नान कराने से बाह्य परजीवी मर जाते हैं। "इलाज से अच्छा बचाव" कहावत के अनुसार पशुपालक अपने पशुओ को स्वस्थ रखने के लिए बकरी की निम्नलिखित प्रमुख बीमारियों तथा उनके बचाव की जानकारियों को अपनाना आवश्यक है।

बकरियों में प्रमुख रोग

फडकिया (ई.टी.)–

यह बकरी में पाया जाने वाला मुख्य जीवाणु जनित रोग है। इस रोग के प्रारम्भिक लक्षण खाना पीना बंद कर देना, चक्कर आना तथा खूनी दस्त होना है। यह बीमारी पशु के चारे में परिवर्तन या अधिक मात्रा में चारा खाने से हो सकती है। इस बीमारी में पशु की चरते चरते मोके पर ही अथवा 36 घन्टो के अन्दर मृत्यु हो जाती है। इस बीमारी का समय पर टीकाकरण करके पशुओ को बचाया जा सकता है। पशु को इस बीमारी से प्रभावित होने पर आधे कप पानी में 1 या 2 दाने लाल दवा घोलकर पिलाने से फायदा होता है। बकरियों में बीमारी होने पर तुरंत पशु चिकित्सक से सलाह लें ।

निमोनिया–

बकरिया शुष्क स्थान पर रहना पसंद करती है और नमी व ठंड के प्रति संवेदनशील होती है। ठंड व नमी वाले स्थानों पर निमोनिया बीमारी से ग्रसित हो कर पशु मर जाते है। यह रोग बारिश से भीगे पशुओ में मुख्यत देखा जा सकता है। इस बीमारी के मुख्य लक्षण सांस लेने में कठिनाई, खांसी, मुंह व नाक से स्राव तथा खाना पसंद न करना है। पशुपालक अपने पशुओ को नमी व ठंड से बचाए। तारपीन के तेल की भाप देने से पशु को आराम मिलता है। बकरियों में बीमारी होने पर तुरंत पशु चिकित्सक से सलाह लें ।

चेचक (गोट पॉक्स)–

यह एक विषाणु जनित रोग है जिसमें पशु के मुंह, नाक, थनों पर तथा पिछले पेरो के मध्य छाले बन जाते है। इसमे पशु को बहुत खुजली होती है। यह छाले पकने के बाद झड़ जाते है तथा उनके निशान बन जाते है। इस बीमारी की मृत्युदर कम है। सही समय पर टीकाकरण ही इसका सफल बचाव है।

प्लेग (पी.पी.आर.)–

यह एक विषाणु जनित रोग है जो बकरियों में तीव्रता से फेलता है। यह रोग 4 से 12 माह के बच्चो को अधिक प्रभावित करता है। इस बीमारी से ग्रसित होने पर पशु को तेज बुखार, दस्त एवं सांस लेने में तकलीफ होती है। पशु को भूख नही लगती, आँख व नाक से स्राव निकलता है तथा उदास हो जाता है। दस्त शुरु होने के बाद पशु की एक सप्ताह में मृत्यु हो जाती है। इस बीमारी का टीकाकरण ही एक मात्र बचाव है।

खुरपका–मुंहपका (एफ.एम.डी.)–

यह तीव्रता से फैलने वाला एक विषाणु जनित रोग है। इस बीमारी के मुख्य लक्षण मुंह तथा खुरो के मध्य छाले, लंगड़ा कर चलना, चारा नही खाना, तीव्र बुखार एवं गर्भपात आदि है। पशुओ की वृद्धि तथा उत्पादन कम हो जाता है। लेकिन पशुओ की मृत्यु बहुत ही कम होती है। इस रोग के विषाणु स्पर्श व वायु से फैलते है। पशु के छालो को लाल दवा (1:1000) के घोल से धोये। पशु के मुँह में फिटकरी तथा खुरों पर नीले थोथे का घोल लगाने से पशु को आराम मिलता है। इस बीमारी से ग्रसित होने के पश्चात पशु स्वतः ही ठीक हो जाता है। प्रत्येक छः महीने पश्चात् टीकाकरण ही इस बीमारी से प्रमुख बचाव है।

बाह्य परजीवी–

बकरियों पर अधिक मात्रा में बाल होने के कारण इनमें बाह्य परजीवियों का आक्रमण अधिक संख्या में होता है जो कि बरसात के मौसम में अत्यधिक हो जाता है। ये परजीवी पशु का रक्त चूसते हैं, खुजली पैदा करते हैं तथा कई प्रकार की बीमारियां फैलाते हैं। इसी वजह से पशु कमजोर हो जाता है, वृद्धि रूक जाती है तथा कभी–कभी पशु मर भी सकता है। इन परजीवियों के आक्रमण से बचाव के लिए पशुओं की डिपिंग (डेल्टामेथरीन/सायपरमेथरीन का घोल–1 मि.ली. प्रति ली. पानी के अनुपात में मिलाकर स्नान) अति आवश्यक है। इसी

समय बाडे के अन्दर भी कीटनाशक घोल का छिड़काव करना बहुत जरूरी है। पशुपालक पशु के शरीर पर कपूर, तम्बाकू व खेर का लेप लगाकर उसे बाह्य परजीवियों से दूर रख सकते हैं।

अन्तः परजीवी–

यह परजीवी इन पशुओं में गम्भीर समस्या पैदा करते हैं। ये इनका रक्त चूसते हैं तथा खनिज लवण व विटामिन की कमी पैदा करते हैं। ऐसा होने से पशु कमजोर हो जाता है, वृद्धि रूक जाती है, गुहा पतली हो जाती है एवं उसमें से बदबू आती है। इन परजीवियों से बचाव के लिए पशुओं को समय–समय पर पशु चिकित्सक की देख–रेख में कृमिनाशक (एल्बेन्डाजोल /फेनबेन्डाजोल आदि) घोल देना चाहिए।

खूनी दस्त–

यह बीमारी 1 से 4 महीनों के बच्चों में एक अन्तः परजीवी के कारण होती है। इस बीमारी के लक्षणों में तीव्र खूनी दस्त, भूख न लगना, शारीरिक भार में गिरावट, रक्तहीनता आदि प्रमुख हैं। एक ही बाड़े में सीमित संख्या से अधिक बच्चे व फर्श के गीला होने से इस बीमारी में बढोत्तरी हो जाती है। इससे बचाव के लिए फर्श की सफाई के साथ–साथ खाने व पानी की जगह को भी साफ रखना अति आवश्यक है। पशु चिकित्सक की सलाह से इस रोग हेतु काम आने वाली एम्प्रोलियम व मोनेन्सिन आदि दवाइयों का उपयोग इस बीमारी के बचाव के लिए बरसात के मौसम के पहले किया जा सकता है।

आफरा–

जुगाली पशु के उदर (ओजरी) में आवश्यकता से अधिक गैस के बनने एवं इकठ्ठा होने से आफरा हो जाता है। यदि यह गैस न निकले तो पशु की तुरंत मृत्यु हो जाती है। पशुओं में अत्यधिक मात्रा में हरा चारा खा लेने से या चारे में एकदम बदलाव होना आफरे का कारण बन जाता है। पेट का फूलना, बेचैनी, कठिनाई भरा श्वास, खाना–पानी छोड़ देना आफरे के मुख्य लक्षण हैं। आफरा रोकने के लिए पशु को एक स्थान पर खड़े न रहने देना व निरन्तर चलाना, पशु के पेट से गैस निकालना(पशु के बाँये पेट पर ट्रोकार केनुला या मोटी सुई द्वारा छेद करके) एवं पशु को अजवायन मिलाकर मीठा तेल पिलाना चाहिए। पशु को 40–50 मि.ली.ब्लोटासिल /ब्लोटिनेक्स या 15–20 ग्राम टिम्पोल पाउडर, 30 ग्राम मीठा सोडा सहित दिन में दो बार पिलाने से आफरे से बचाया जा सकता है। गुनगुने पानी में फिटकरी, गुड़ व हल्दी का मिश्रण पिलाने से भी पशु का आफरा कम हो जाता है।

रख रखाव व बिक्री

गाभिन बकरियों की देख–रेख बकरियों की अच्छी सेहत के लिए गाभिन बकरी के ब्याने के 6–8 सप्ताह पहले ही दूध निकालना बंद कर दें। ब्यांत वाली बकरियों को ब्याने से 15 दिन पहले साफ, खुले और कीटाणु रहित ब्याने वाले कमरे में रखें।

ब्याने के बाद बकरियों की देख–रेख

ब्यांत वाले कमरों को ब्याने के तुरंत बाद साफ और कीटाणु रहित करें। बकरी का पिछला हिस्सा आयोडीन या नीम के पानी से साफ करें। बकरी को ब्याने के बाद गर्म पानी में शीरा या शक्कर मिलाकर पिलायें। उसके बाद गर्म चूरे का दलिया जिसमें थोड़ी सी अदरक, नमक, धातुओं का चूरा और शक्कर आदि मिले हों, खिलाना चाहिए।

बच्चों की देख–रेख

जन्म के उपरांत सर्वप्रथम नवजात बच्चे के नथुनों को साफ कर उसे सामान्य रूप से सांस लेने में मदद करनी चाहिए। जन्म के पश्चात बच्चे को उसकी मां के साथ रहने के लिए पहले से तैयार बाड़े में स्थानान्तरित कर देना चाहिए। बच्चों को सूखी–मुलायम घास की बिछावन वाले स्थान पर रखना चाहिए। बकरी ब्याने पर बच्चे की नाल दो इंच छोड़कर नये ब्लेड से काटकर टिंक्चर आयोडिन लगा देना चाहिए। नवजात बच्चे को 30 मिनट के अंदर बकरी का पहला दूध (खीस) पिला देना चाहिए। दूध दो बार बच्चों को पिलाना अति उत्तम है। बच्चों को जन्म के पन्द्रह से बीस दिनों के अंदर सींग रहित कर सकते हैं।

बच्चों पर पहचान चिन्ह लगाना : पशुओं के उचित रिकॉर्ड रखने, उचित खुराक खिलाने, अच्छा पालन प्रबंध, बीमे के लिए और मलकीयत साबित करने के लिए उन्हें नंबर लगाकर पहचान देनी जरूरी है। यह मुख्यतः टैटूइंग, टैगिंग, वैक्स मार्किंग क्रियॉन, स्प्रे चॉक, रंग बिरंगी स्प्रे और पेंट ब्रांडिंग से किया जाता है।

बकरियों की बिक्री व छंटनी

इस व्यापार को चलाने के लिए मार्केटिंग की आवश्यकता बहुत अधिक होती है। अतः आपको बकरी फार्म से लेकर माँस के दुकानों तक अपना व्यापार पहुंचाना होता है । आप अपनी बकरियों से प्राप्त दूध को विभिन्न डेयरी फार्म तक पहुँचा सकते हैं। बढ़िया बकरों को ईद या स्थानीय मांस की दुकानों में बेच कर अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते है। भारत में एक बड़ी संख्या की आबादी मांस खाती है। अतः माँस के बाजार में इसका व्यापार आसानी से हो सकता है। उन्नत नस्ल के प्रजनक बकरे व बकरियां भी आसानी से बेचीं जा सकती और अच्छा लाभ कमाया जा सकता है। रेवड़ में समय–समय पर अवांछित जानवरों की छंटनी कर निस्तारण करना भी आवश्यक क्रिया है। बकरियों में छंटनी करने के अनेक आधार हो सकते है जैसे – जानवर में शुद्ध नस्ल के गुण न होना, रेवड़ के औसत से कम शरीर भार व दुग्ध उत्पादन होना, एक बच्चा पैदा करने वाली मादा का होना, दो ब्यांतों में ज्यादा अन्तराल होना, जल्दी–जल्दी बीमार होना आदि। छंटनी करने से रेवड़ में नस्ल की शुद्धता बनी रहती है व कम उत्पादक पशुओं द्वारा खाये गये चारे–दाने का उपयोग उत्पादक जानवरों द्वारा कर लिया जाता है। उपरोक्त दिये गए बिन्दुओं पर ध्यान देकर बकरीपालक अधिक आमदनी प्राप्त कर सकते हैं तथा बकरियों को स्वस्थ एवं रोगमुक्त रखकर अधिक बच्चे भी प्राप्त कर सकते हैं।

बकरी पालन में समस्याएं

बकरी गरीब की गाय होती है, फिर भी इसके पालन में कई दिक्कतें भी आती हैं. बरसात के मौसम में बकरी की देख–भाल करना सबसे कठिन होता है, क्योंकि बकरी गीले स्थान पर बैठती नहीं है और उसी समय इनमें रोग भी बहुत अधिक होता है। बकरी का दूध पौष्टिक होने के बावजूद उसमें महक आने के कारण कोई उसे खरीदना नहीं चाहता, इसलिए उसका कोई मूल्य नहीं मिल पाता है। बकरी को रोजाना चराने के लिए ले जाना पड़ता है, इसलिए एक व्यक्ति को उसी की देख–रेख के लिए हमेशा रहना पड़ता है।

बकरी पालन के फायदे

सूखा प्रभावित क्षेत्र में खेती के साथ बकरी पालन आसानी से किया जा सकने वाला कम लागत का अच्छा व्यवसाय है, इससे मोटे तौर पर निम्न लाभ होते हैं–

- ❖ जरूरत के समय बकरियों को बेचकर आसानी से नकद पैसा प्राप्त किया जा सकता है।
- ❖ यह व्यवसाय बहुत तेजी से फैलता है। इसलिए यह व्यवसाय कम लागत में अधिक मुनाफा देना वाला है।
- ❖ इनके लिए बाजार स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध है, अधिकतर व्यवसायी गांव से ही आकर बकरी–बकरे को खरीदकर ले जाते हैं।

बकरी पालन हेतु सावधानियां

- ❖ आबादी क्षेत्र जंगल से सटे होने के वजह से जंगली जानवरों का भय बना रहता है, क्योंकि बकरी जिस जगह पर रहती है, वहां उसकी महक आती है और उस महक को सूंघकर जंगली जानवर गांव की तरफ आने लगते हैं। कई बार तो वो पालतू जानवरों को नुकसान भी पहुंचा देते है।
- ❖ बकरी के छोटे बच्चों को कुत्तों से बचाकर रखें।
- ❖ बकरी एक ऐसा जानवर है, जो फसलों को अधिक नुकसान पहुँचाती है, इसलिए खेत में फसल होने की स्थिति में विशेष रखवाली करनी पड़ती है।

बकरी पालन हेतु आय – व्यय का विश्लेषण

बकरी पालन यूनिटः– 01 नर तथा 10 मादा पशुओं हेतु व्ययः–

❖ नर व मादा पशु क्रय	– 01 नर : 12000.00
	– 10 मादा : 85000.00
❖ आहार	– 500 ग्राम दाना प्रति वयस्क
	– 100 से 300 ग्राम दाना प्रति बच्चे
शारीरिक भार के अनुरूप 8 घण्टे चराई के साथ	– 40,000.00
3) – आवास पर व्यय	– 35,000.00
4) – बीमा, परिवहन एवं अन्य व्यय	– 15,000.00
	कुल व्यय – 1,87,000.00

आय :– बकरी दो वर्ष में तीन बार बच्चे देती है तथा एक बार में औसतन दो बच्चे देती है। इसलिए एक वर्ष में औसत तीन बच्चे देती है।

01 बकरी की आय	3X10000	= 30,000.00
10 बकरियों की आय	30X10000	= 300,000.00
10 बकरियों की खाद की आय		= 15,000.00
कुल आय		= 3,15,000.00

लाभ = कुल आय – कुल व्यय

= 3,15,000 – 1,87,000

= 128,000.00 रूपये प्रति वर्ष

इस प्रकार बकरी पालक अपने निजी उपयोग के लिए दूध व मांस उत्पन्न कर सकते है तथा कम लागत से अधिक आय प्राप्त कर सकते है।

तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग
कुलपति
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
निदेशक
प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

डॉ. जे. पी. मिश्रा
निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

सम्पर्क सूत्र

डॉ. सुरेश चंद कांटवा
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केन्द्र, हनुमानगढ़-II (नोहर)
7697192001

मुद्रक : जवाहर प्रेस, बीकानेर # 9784911114